प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी द्वारा दिनांक -
15.8.1988 को स्वाधीनता दिवस के अवसर
पर लाल किला, दिल्ली में दिया गया भाषण

भारतवासियो, बहनों और भाईयो, मैं आज आपको स्वातंत्रता दिवस की शुभ कामनायें देना चाहता हूं । इस साल बरसात बहुत अच्छी हुई है और मैं हमारे सब किसान, खेत मजदूर भाईयों को, बहनों को बधाई देना चाहता हूं क्योंकि बहुत साल बाद ऐसी बरसात हुई है । !तालियां! आज जब सोचते हैं पिछले सालों का और हम आगे देखते हैं क्योंकि 15 अगस्त को हमें दोनों बातें करनी चाहियें । एक तरफ हमें आगे देखना है भविष्य की तरफ कि देशको कहां ले जाना है । हमारी जनता को कैसे आगे बढ़ाना है । और दूसरे तरफ हमें देखना है कि हम कैसे रास्ते से निकल के आये हैं । और कैसा सुधार हो सकता है भविष्य में । आज जब हम पिछले 4 साल की तरफ देखते हैं तो सबसे पहले तो देशकी आर्थिक स्थिति में हमें दिखाई देता है कि परिवर्तन बहुत हुआ लेकिन साथ में हमें याद रखना चाहिये कि 84 में और 85 में खराब बरसात हुई थी और फिर 86 में सूखा पड़ा था और पिछले साल बहुत भयंकर सूखा पड़ा, जैसा किसीको याद नहीं था । लेकिन इन सब के बावजूद भी देश बहुत मजबूती से आगे बढ़ा है । पिछले साल हमने सूखे का पूरी तरह से मुकाबला किया, दिल्ली से, केन्द्र से हमने पहले ध्यान देना शुरू किया और हमने बहुत सख्ती से कार्यवाही करी । हमारी पूरी कोशिश थी कि जहां तक सूखे की समस्या हो हम राजनीति को बीच में न लायें । और हमारा ध्यान पूरा लोगों की तरफ जाये, जनता की तरफ जाये । उनकी तरफ रहे जो सूखे के दबाव के नीचे झुक रहे थे, जिनको मदद की जरूरत थी । हमने पिछला साल इसी काम में लगाया । हमारा पूरा ध्यान जनता की तरफ था । हम और चीजों

में डूबे हुए नहीं थे । और क्योंकि हमने पूरा ध्यान दिया भारत इस भयंकर सूखे से निकला है और हमारी विकास की गति रुकी नहीं, थोड़ी धीमी जरूर हुई लेकिन तब भी हम आगे बढ़े है और मजबूती से आगे बढ़े हैं । दुनियां ने देखा भारत ने कैसे इस सूखे का मुकाबला किया । और दुनियां समझ गयी है कि भारत अब एक मजबूत देश बन गया है । बहुत बड़े-बड़े संकट का सामना कर सकता है । कोई भी भारत को आज दबा नहीं सकता है, रोक नहीं सकता है । मैं आज उन सब लोगों को मुबारकबाद देना चाहता हूं जिन्होंने इस सूखे के मुकाबले में अपना कन्धा लगाया था, काम किया था । चाहे वो राजनीति में हों, चाहे प्रशासन में हों, चाहे दूसरे वालण्ट्री आरगेनाईजेशन में से लेकिन सब से ज्यादा बधाई मैं किसानों को और खेत मजदूरों को देना चाहता हूं, उन सूखे इलाकों ने जिन्होंने बहुत दृढ़ता से उसका मुकाबला किया था । मैंने कहा कि सूखा पड़ा था लेकिन तब भी देशका विकास नहीं रुका । देश तब भी तेजी से आगे बढ़ा है । हमारे इन्फ्रास्टक्चर की जो परफोरमेंस थीं बहुत ही अच्छी रही है । इसी तरह से भारत का उद्योगीकरण भी तेजी से होता रहा है । हमने उसे रुकने नहीं दिया । पहली बार ऐसे मुश्किल से निकलते हुए देश आगे बढ़ा है । विकास की गति रुकी नहीं । पहली बार हमें दूसरों के दरवाजे से बर्तन ले के पहुंचना नहीं पड़ा ।यह गौरव की बात है यह शान की बात है और यह हम कर पाये हैं । क्योंकि 40 साल से/जो पंडितजी ने, इंदिराजी ने काम किया था उसका नतीजा आज हमारे सामने हैं। इन कठिनाईयों से निकलते हुए भी हमने गरीबों की तरफ हमारा ध्यान कम नहीं किया । हमने गरीबी हटाने के कार्यक्रमों को हमने और मजबूत किया और तेजी से लागू किया । चाहे महिलाओं के लिए थे, चाहे बच्चों के

के विकास के कार्यक्रम थे । चाहे हरिजन आदिवासियों के लिए कार्यक्रम थे । हमने बहुत मजबूती से लागू करे । जितना साथ हमने इन सालों में गरीबी हटाने में लगाया है पहले कभी नहीं लगाया गया था । तब भी कभी-कभी ऐसी घटनायें हो जाती हैं जिससे बहुत दुख होता है । पिछले दिनों में जहानाबाद में एक बहुत बड़ी घटना हुई । एक दुर्घटना हुई. इससे पूरे देशका सिर झुक जाता है और हमारी कोशिश होगी कि ऐसी घटना दोबारा नहीं हो पाये । मैं जानता हूं कि हमारे कानूनों में कभी-कभी कमियां होती हैं. कभी जो कार्यवाही हम करने जाते हैं वो पूरी तरह से हम नहीं कर पाते हैं । अगर जरूरत होगी तो हम कानून बदलेंगे लेकिन हम देखेंगे कि ऐसी घटना दोबारा न हो और ठीक से समय से लोगों को सजा मिले । इसी तरह से हमें देखना है कि हमारे अल्पसंख्यकों को पूरा मौका मिले आगे बढ़ने का. देश बनाने में अपना हाथ लगाने का. हमारे कमजोर हल्कों को मदद चाहिये सहायता चाहिये और वो हम देंगे । हमें देखना है कि हमारे देशके जो पिछड़े वर्ग हैं उन्हें हम और मजबूत करें आगे बढ़ने का मौका दें । आर्थिक स्थिति तो मजबूत रही । इसी तरह से इन सालों में हमने देशकी राजनीति से भी कुछ मजबूती पहुंचाई है । अगर आप याद करें साढ़े तीन साल हुए नवंबर 84 में जब हमारी सरकार आई थी तब देशकी क्या स्थिति थी । आपको याद होगा एक काला बादल देशमें छाया हुआ था । लोगों के दिल में मन में एक ही प्रश्न था कि देशका क्या होगा । भारत एक रहेगा कि भारत टूट जायेगा । इन्दिराजी की हत्या हुई थी । दिल्ली में दंगा-फसाद हो रहा था । पंजाब की बुरी हालत थी । आसाम में आन्दोलन चल रहा था. मिजोरम में आन्दोलन था. त्रिपुरा में आतंकवाद चल रहा था। बंगाल में दार्जलिंग के पहाड़ों में एक नया आन्दोलन शुरू हो गया था.

और दक्षिण में हमारे तामिल लोग असंतुष्ट थे । क्योंकि श्रीलंका में तामिल्स की समस्या है । बहुत बड़ी चल रही हैं । आज अगर हम देखें तो बहुत सुधार आया है । श्रीलंका में एक समझौता हुआ है । हमारी उम्मीद है जल्दी से पूरा होगा लेकिन जो दक्षिण भारत में लोग असंतुष्ट थे वो अब दूर हो गयी । दार्जिलिंग में एक समझौता हुआ है और शांति आ गयी है । त्रिपुरा में समझौता हुआ है. आतंकवाद अत्म हो गया है. मिजोराम में समझौता हुआ. शांति आई है. आसाम में शान्ति आई है, पंजाब में भी बहुत परिवर्तन हुआ है लेकिन जितना हम चाहते थे वो नहीं हो पाया है । अगर हम देखें, पंजाब को 84 में देखें और 88 में देखें तो आप देखेंगे कितना फर्क है । वो भावना नहीं है । आज प्रशासन हमारे साथ मजबूती से चल रहा है । आज पंजाब की जनता देश के हक में खड़ी है । आज उग्रवाद का आतंकवाद का मुकाबला मजबूती से पंजाब का हर व्यक्ति कर रहा है । हमने इन दिनों में दिखाया है कि जहां पर भारत की सरकार मजबूती से सख्ती से खड़े होना चाहती है अपना मजबूत हाथ दिखाना चाहती है तो हम बहुत मजबूती से काम कर सकते हैं । पिछले महीनों में जो आपरेशन ब्लैक थण्डर हुआ था उससे हमने दिखाया आली देशको नहीं बल्कि दुनियां को कि भारत के जो सिक्योरिटी फोरसेस हैं वो बहुत अनुशासन में और बहुत मजबूती से कार्यवाही कर सकती हैं । साथ में हमने दिखाया कि जो आतंकवादी हैं वो आली आतंकवादी हैं । उनके दिल में उनके मन में कोई धर्म नहीं है ।जिस तरह से और जो काम उन्होंने उस पवित्र स्थान में किया वैसा भारत के किसी भी पवित्र स्थान में कभी भी शायद नहीं हुआ । इस तरह का डैसीक्रेशन न हमने देखा था और न हमारी उम्मीद है कि भारत के किसी भी पवित्र स्थान में ऐसा भविष्य में न भी हम देखेंगे । सीमा पर हम बहुत तेजी से कार्यवाही कर रहे हैं जिसमें लोग आर-पार न आ पायें और हम आतंकवादियों को काबू कर पायें । हमारा दुख है कि

सीमा पार से आज भी उन्हें सहायता मिलती है और हमारी उम्मीद है कि वहां के लोग जल्दी से समझ जायेंगे उनकी गलती की गम्भीरता- हम नहींचाहेंगे कि हमें कोई ऐसी कार्यवाही करनी पड़े जिससे उन्हें बाद में पछताना पड़े या कुछ सोचना पड़े । इन सालों में हमने देशकी भावना बिल्कुल बदल डाली । कहां वो भावना थी, कहां वो काले बादल थे 84 के और कहां आज एक मजबूत देश गौरव के साथ, धीरज के साथ आगे बढ़ रहा है । आज कोई देशके टूटने का प्रश्न नहीं उठाता है । क्योंकि भारत ने दुनियां को दिखा दिया है कि भारत की ऐसी शक्ति है कि भारत को कोई भी कमजोर नहीं कर सकता । तब भी हमारी एक कमजोरी है जो हमें पूरी तरह से दूर करनी है । हमारे देशमें फिरकाप्रस्त शक्तियों को हमें खतम कर देना है । हमें देखना है कि हमारी धर्मनिरपेक्षता मजबूत हो । हमें देखना है कि कोई भी राजनीति में धर्म को मिलाकर नहीं चलाये। हम देखेंगे अगर कानून की जरूरत होगी, अगर दूसरी कार्यवाही की जरूरत होगी तो हम वो कार्यवाही करेंगे । लेकिन हम इन फिरकाप्रस्त शक्तियों का मुकाबला पूरी तरह से करेंगे । हम कोशिश करेंगे । सब को एक साथ लेकर। तब जो फिरकाप्रस्त शक्तियों का मुकाबला करना चाहते हैं उन्हें हम एक करेंगे । एक साथ चलेंगे और इन शक्तियों का मुकाबला करेंगे । हमारी हर वक्त कोशिश है कि भारत में सर्वधर्म समभाव की जो भावना बनी है वो मजबूत हो और बनी रहे ।

इन सालों में हमने भारत की सुरक्षा की तरफ भी बहुत ध्यान दिया है । आज हमारी फौजें बहुत मजबूत हैं । जितनी मजबूत आज हमारी फौजें हैं उतनी मजबूत कभी नहीं थी । आज हम कई तरह से आक्रमण का मुकाबला कर सकते हैं । यह पहले कभी नहीं होता था । साथ में हमने हमारी फोजों-- हमारी डिफेंस की जो आर एण्ड डी है जो विज्ञान है और जो टैक्नोलोजी है उसे बहुत बढ़ावा दिया है । पहली बार हमारी टैक्नोलोजी बिल्कुल आगे निकल गयी है । आगे

निकले हुए देशों का मुकाबला कर रहे है । कई जगह हम उनके बिल्कुल साथ मिल गए हैं । हमारी उम्मीद है आते हुए सालों में हम और मजबूती से इस रास्ते पर चलेंगे और हम दुनियां को दिखायेंगे कि भारत पूरी तरह से अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है, पूरी तरह से हर चुनौती का मुकाबला कर सकता है । कोई भी हमें हमारे रास्ते से नहीं उतार सकता है । आज के दिन मैं हमारे सब फौजी भाईयों और बहनों को बड़ा मुबारक देना चाहता हूं उनके अनुशासन पे, उनके काम से उनकी दृढ़ता पर, उनके मजबूती से हम भारत में आनन्दमय सो सकते हैं रोज़ । इसी तरह से हमने इन सालों में भारत का नाम दुनियां में बहुत ऊंचा उठाया है । हम चाहते हैं कि हमारी दोस्ती सबके साथ हो । हम चाहते हैं पूरी दुनियां में मानवता की, एकता की भावना बने जिसमें सबका ध्यान गरीबी दूर करने में लगे, सबका ध्यान कमजोर लोगों को आगे बढ़ाने में लगे । हम चाहते हैं कि गांधी जी के सिद्धान्त अहिन्सा के, गांधी जी के सिद्धान्त सहनशीलता के दुनियां भर में फैलें । और हमने पूरा जोर लगा दिया है इन सिद्धान्तों को दुनियां के कोने-कोने में पहुंचाने के लिए । गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के द्वारा हमने दुनियां के 10। देश में यह भावनाएं पहुंचायी हैं । लेकिन उससे भी आगे हम निकल पाये हैं । हम उन देशों में भी यह भावनाएं पहुंचा पायें हैं जो बिल्कुल इन सिद्धान्तों को मानते नहीं है । बड़ी शक्तियों पर भी यह सिद्धान्त पहुंचे हैं और उनका प्रभाव हुआ है । हमारी उम्मीद है कि इस रास्ते पर हम और भी मजबूती से चल पायेंगे, दुनियां में एक नयी भावना पहुंचायेंगे, शान्ति की, सहनशीलता की, मानवता को एक बनाने की, आगे बढ़ाने की और इस रास्ते पर पंडितजी ने हमें बढ़ाया था, इंदिराजी ने हमें चलाया था और इस रास्ते पर हम मजबूती से चलेंगे। हटेंगे नहीं । पड़ोस में हम हमारी पड़ोसी देशों से दोस्ती चाहते हैं, हम चाहते हैं कि हम आपस में मिलकर हमारे लोगों के विकास का काम करें । हमारे लोगों के विकास की बातें करें । इसी में हमने सार्क को शुरू कराया और सार्क बहुत मजबूती से आगे बढ़ा है । अभी भी मुश्किलें

काफी हैं. रास्ता कठिन है लेकिन हम उसे कठिन नहीं बना रहे । हमारे दिल में दोस्ती है. सहनशीलता है. हम चाहते हैं कि हमारा रीज़न मजबूत हो और हम इस रास्ते पर और तेजी से कूच करेंगे । हमारे पड़ोस में अफगानिस्तान में एक आन्दोलन चल रहा था और हमें बहुत खुशी है कि एक समझौता हुआ है और वहाँ भी शान्ति आ जायेगी लेकिन जरूरी है कि जेनेवा में जो समझौता हुआ उसी रास्ते पर लोग चलें उससे उतरें नहीं । अगर उस समझौता--अगर वो समझौता टूटेगा तो कमजोरी आयेगी. ऐसी शक्तियां आयेंगी. ऐसी शक्तियां आगे बढ़ेंगी जो पूरे रीज़न में कमजोरी लायेंगी । हमारी उम्मीद है कि सब पार्टियां जेनेवा के समझौते पर चलेंगी और उसमें कोई कमजोरी नहीं आने देंगी । दुनियां में एक ही कोना है जिसमें आज भी रंग पर मतभेद चलता है । दक्षिण-अफ्रीका में अपारथाईड आज भी चालू है ।भारत में आजादी के पहले से गांधी जी के नेतृत्व में, जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में अपारथाईड़ का मुकाबला किया और अपनी आवाज उठायी ।आज भी बहुत मजबूती से हम अपनी आवाज अपारथाईड़ को खतम करने में लगा रहे हैं. पूरा बल लगा रहे हैं और हम इस आन्दोलन को छोड़ेंगे नहीं जब तक अपारथाईड़ खतम होगा । जब तक दुनियां में गुलामी खतम होगी । इसी तरह से फिलस्तनियों का जो आन्दोलन है उसपर भी भारत मजबूती सेसहारा देता है । हम चाहेंगे कि जल्दी से यह समझौता हो, हम चाहेंगे कि फिलस्तनियों को अपना एक घर मिले । अपनी मातृभूमि में, और हम चाहेंगे कि शान्ति दुनियां के उस हिस्से में भी आये । लेकिन अगर गरीबी दूर होनी है, अगर कमजोर देशों को तेजी से आगे बढ़ना है तो डिसआरमामेंट की बहुत--न्यूक्लीयर डिसआरमामेंट की बहुत बड़ी जरूरत है और जितने जोर से, जितनी ताकत से भारत ने यह आन्दोलन उठाया है, जितनी मजबूती से हमने अपनी आवाज उठायी है, शायद दुनियां में किसी और ने नहीं किया । पहली

बार युनाइटेड नेशन्स में हमने एक ऐसा एक्शन प्लान रखा जिससे पूरी दुनियां में डिसआरमामेंट हो सकती है। शान्ति की भावना फैल सकती है और पहली बार एक ऐसी योजना हमने रखी जिसपर सब मिलकर चल सकते हैं। हमारी उम्मीद है कि लोग इसी रास्ते पर आयेंगे। लेकिन हम ~~सब ने~~ हैं जानते हैं कि यह जल्दी से नहीं हो सकता है तेजी से नहीं हो सकता है और यह रास्ता आसान नहीं है। 40 साल हुए जवाहरलाल नेहरू ने गांधीजी के सिद्धान्तों पर एक नयी विदेशनीति निकाली थी। करीब 30 साल हुए उन्होंने गुटनिरपेक्षता का झण्डा चढ़ाया था और आज हम देख रहे हैं कि जो डिसआरमामेंट की बात उन्होंने तब उठायी थी गुटनिर्पेक्षता की, नीचे -- उसपर पहली बार कार्यवाही हुई है। जवाहरलाल नेहरू के बात उठाने के 30-35 साल बाद पहला समझौता हुआ है, परमाणु शक्ति के हत्थियारों को खतम करने का। तो हम जानते हैं कि यह रास्ता न आसान है, न जल्दी से हम इसे पार कर पायेंगे। लेकिन हम जानते हैं कि अगर दुनियां में शन्ति आनी है अगर भारत जैसे देशों को आगे बढ़ना है, मजबूत होना है और सबसे जरूरी अगर हमारे गरीब जनता को हमें ऊपर उठाया है तो हत्थियारों में पे जो खर्चा हो रहा है वो खतम करना है, पूरा साधन गरीबी हटाने में लगाना है। मनुष्यता को ऊपर उठाने में लगाना है। इस आन्दोलन पर भी हम मजबूती से आगे बढ़ रहे हैं और हम कोई भी कमजोरी इसमें नहीं आन देंगे। इन सालों में दुनियां में भारत और ऊंचा उठा है। भारत को ~~और~~/बहुत मान्यता मिली है और बहुत बड़े-बड़े सभाओं में भारत ने भाग लिया है। हमारी उम्मीद है कि आते हुए सालों में भारत और भी मजबूती से दुनियां में इस तरह से भाग लेगा, भारत में जो भावनाएं, भारत की जो एतिहासिक भावनाएं हैं वो हम दुनियां में पहुंचा पायेंगे क्योंकि तभी हमारा रास्ता बनेगा क्योंकि तभी गांधीजी के सिद्धान्त, गांधीजी की विचार-धाराओं को हम पूरी तरह से उन्हें दुनियां के कोने-कोने तक पहुंचा पायेंगे। लेकिन आज 15 अगस्त को हमें भविष्य की तरफ भी देखना

है । हमें देखना है भारत के सामने कैसी चुनौतियां हैं । चुनौतियां तो बहुत हैं लेकिन अगर मुझे आपके सामने दो रखनी हों तो मैं सबसे पहले गरीबी की, बेकारी की रखूंगा और दूसरा मैं आपके सामने रखूंगा भारत को महान बनाने की । भारत को उसी शिखर पर पहुंचाने की जहां भारत था गुलामी के पहले । गरीबी हटाने के लिए बहुत करने की जरूरत है । बहुत काम हमने शुरू करा है । बहुत कार्यक्रम हमने लगाये हैं लेकिन तब भी बहुत और करने की जरूरत है । आज अगर तेजी से हमें गरीबी हटानी है, रोजगारी देनी है तो हमें सबसे पहले देहात की तरफ देखना है । जब हम देहात की ओर तरफ देखते हैं तो किसान की तरफ देखते हैं, खेत मजदूर की तरफ देखते हैं कि वहां पर इन लोगों के सामने सबसे बड़ी कठिनाईयां हैं । हमारी कोशिश है कि हम सबसे पहले इस सैक्टर को मदद करें आगे बढ़ने में । अगर सचमुच में कृषि में विकास आना है तो हमें गम्भीरता से भूमि सुधार की तरफ देखना है । अगर भूमि सुधार खासकर पूर्वी भारत में नहीं हो पायेगा तो वहां हरित क्रान्ति नहीं पहुंच पायेगी । हम बहुत गम्भीरता से और जोर से इस प्रश्न को देखेंगे और हल करने की कोशिश करेंगे । फिर हमने इन सालों में देखा कि हमारी योजना कृषि की योजना एक ही योजना थी । चाहे मैदानों के लिए हो, चाहे पहाड़ों के लिए हो, चाहे रेगिस्तान के किसान से, चाहे दक्षिण भारत के किसान से, हमारी योजना एक ही है । हमने यह सब बदल डाला है । हमने देश को 15-16 हैगोक्लाइमैटिक जोन्स में बांट दिया है और अब हम बहुत बारीकी से देखते हैं कि किसान के सामने कैसी कठिनाईयां हैं । उसकी जमीन कैसी है, पानी कैसे मिलता है, कितनी खाद की जरूरत है, कैसे बीज की जरूरत है, कैसी फसल लगनी चाहिये । पहली बार हम देख रहे हैं कि इतनी बारीकी से किसी ने किसान की समस्याओं को देखा । हमारी उम्मीद है कि इस साल हमारी कृषि सैक्टर में बहुत तेजी से विकास होगा । हमारी कोशिश है कि हम हमारे टारगेट दोबारा ऊपर उठा दें और कोशिश करें जो टारगेट्स हमने

तीन साल हुए लगायीं थी उन टारगेट्स पे हम वापिस आ जायें । क्योंकि इसी रास्ते से हम किसानों को, खेत मजदूरों को मदद कर पायेंगे । लेकिन आज हमारे सामने एक और बहुत बड़ा प्रश्न है । पिछले सालों में 40-50 साल में हमारी आबादी बहुत बढ़ गयी, साथ में बहुत विकास का काम हुआ है और इसका नतीजा यह हुआ है कि जहां एक बीघे पर तीन चार लोग रहते थे वहां पर 30-40 लोग हो गए हैं और दूसरी तरफ जहां एक बीघा खेत के लिए होता था वहां सड़कें भी कट गयी हैं, वहां हस्पताल आ गए, स्कूल आ गए, दूसरी संस्थाए बन गयीं । विकास का काम हुआ है और जमीन भी कम हो गयी । हमें आज सोचना है कि जमीन पर कितने लोग रह सकते हैं और फिर हमें सोचना है कि हम कैसे दूसरों को रोजगारी देंगे ।सबसे जरूरी है कि रोजगारी देहात में मिले, बेकारी दूर करनी है तो हमें देहात से शुरू करना है और यही हम करने जा रहे हैं । हमें देखना है कैसे किसान की जो पैदावार है उसकी वैल्यूएशन हो सकती है, कैसे उसे हम प्रोसैस कर सकते हैं जिसमें उसकी बिक्री अच्छी होये और किसान को ज्यादा अच्छे भाव मिले । कैसे ऐसे छोटे कारखाने लग सकते हैं जिस से किसान की पैदावार को, किसान के प्रोड्यूस को हम बाहर दूर-दूर तक पहुंचा सकते हैं । हमारी उम्मीद तो होगी कि भारत के किसानों का काम हम दुनियां को दिखायें । हम यहां से हमारे फल सब्जी और अनाज को एक्सपोर्ट भी कर पायें । हम इस तरफ देख रहे हैं और मैंने खास ध्यान सरकार में लगा दिया है इस तरफ । हमारी उम्मीद है कि ऐसे हम तेजी से विकास ला पायेंगे खासकर पिछड़े हुए देहाती इलाके में । साथ में हमें देखना है कि उद्योगीकरण भी तेजी से हो क्योंकि बगैर उद्योगीकरण से रोजगारी नहीं मिल सकती है, बेकारी दूर नहीं हो सकती है । हमें नये-नये एरियाज़ ढूंढने हैं जहां पर ऐसी रोजगारी हम दे पायें । दुनियां बदल रही है, उद्योग बदल रहे हैं, लोगों के जीने के तरह बदल रहे हैं और उसी के साथ हमें देखना है किस तरह से हम नये एरियाज़ में रोजगारी ढूंढ सकते हैं । हमने यह

..11..

काम भी तेजी से शुरू किया है और हमारी उम्मीद है कि आते हुए महीनों में सालों में आप देखेंगे कि देशका बक्शा एकदम तेजी से बदल रहा है । देश मजबूत हो रहा है । हमारे करोड़ गरीब लोगों को. हमारे युवकों को रोजगारी बहुत मिलेगी और तेजी से हम आगे बढ़ पायेंगे ।

एक बहुत बड़ी कमजोरी है जिसको हम अभी भी पार नहीं कर पायें हैं । बहुत शिकायतें मुझे मिलती हैं कि हमारे कार्यक्रम पूरी तरह से देहात तक. जमीन तक. लोगों के घरों तक नहीं पहुंच पाते हैं । हमें सोचना है कि यह क्यों होता है । मैंने कई बैठके करवाईं । लम्बे-लम्बे घण्टे हमने बहस करी और एक बात सामने आई कि जब तक हम पंचायती राज संस्थाओं को मजबूत नहीं करेंगे. जब तक हम लोगों के हाथ में जिम्मेवारी नहीं देंगे. नीचे नहीं देंगे तब तक यह नहीं हो पायेगा । गांधी जी ने बिल्कुल साफ कहा था, गांधीजी ने कहा था कि स्वराज कि मेरी कल्पना यह नहीं कि सत्ता कुछ ही लोगों के हाथ में आ जाये बल्कि यह है कि जनता में सत्ता का दुरूपयोग रोकने की क्षमता पैदा हो । यही हम भी करना चाहते हैं । अगर कानून बदलने की जरूरत होगी तो अगर संविधान को अमैण्ड करने की जरूरत होगी तो हम जरूर करेंगे । इसमें कोई कमी नहीं छोड़ेंगे । हम देखेंगे कि जनता के हाथ में पूरी ताकत आये । क्योंकि हम जानते हैं कि खाली इस तरह से हम हमारे कार्यक्रमों को पूरे तरह से कामयाब कर सकतेहैं । पूरे तरह से आप तक पहुंचा पायेंगे । लेकिन आज जब हम भविष्य की तरफ देखते हैं तो हमें हमारे राष्ट्र की तरफ देखना है. हमारे देशकी तरफ देखना है और हमें सोचना है कि हम कैसा भारत बनाना चाहते हैं । गरीबी हम दूर करेंगे. बेकारी हम दूर करेंगे. लेकिन देश कैसे बनेगा । हमारी कोशिश होनी चाहिये कि देशको हम उसी शिखर पर. उसी ऊंचे स्तर पर पहुंचा दें जहां पर भारत था.. 250-300। ढाई सो तीन सौ। साल हुए जब दुनियां के कोने-कोने से लोग आते थे भारत को ढूंढने । हम वहां भारत को तभी पहुंचा पायेंगे अगर हम भारत की एकता और अखण्डता को मजबूत करेंगे । अगर हम

सबों का मुकाबला करेंगे जो भारत को कमजोर करना चाहते हैं । भारत मजबूत तब होता है जब भारत का हर हिस्सा मजबूत होता है। लेकिन भारत मजबूत तभी रहता है, जब केन्द्र मजबूत रहता है । हम देखेंगे कि केन्द्र को कोई कमजोर न कर पाये, केन्द्र की ताकत पूरी रहेगी, किसी भी तरह से हम कम नहीं होने देंगे ।

आपके जैसे मुझपर भी और मेरे कन्धों पर भी भारत की विरासत गिरी है । हम सब गांधीजी की जवाहरलाल नेहरू की, इंदिराजी की परम्परा में आगे बढ़ रहे हैं । हमें देखना है कि उनके जो सिद्धान्त थे, उनकी विचारधाराओं पर हम आगे बढ़ें । हमें याद रखना है कि हम गांधीजी के, पंडितजी के, इंदिराजी के रास्ते पर आगे बढ़ें लेकिन साथ में हमें याद रखना है कि आजकी समस्याओं के जवाब, आज के प्रश्न के जवाब हमें देने हैं । जवाब हमें इतिहास में नहीं मिलेंगे और हमें बहादुरी से ताकत से सोच समझ कर भारत का रास्ता बनाना है । हमें याद रखना है कि कुरबानी की जरूरत हो तो हमें कुरबानी देने के लिए तैयार होना है । गांधीजी ने कुरबानी दी थी, पंडितजी ने कुरबानी दी । इंदिराजी ने अपना बलिदान दिया । सबको पूरे देशके लोगों को हर कुरबानी के लिए तैयार होना चाहिये । इसी तरह मैं भी आज हर त्याग के लिए तैयार हूं भारत को मजबूत करने के लिए भारत को आगे बढ़ाने के लिए, भारत की - भारत को दुनियां में अपनी जगह बनाने के लिए, उस शिखर पर चढ़ाने के लिए । आज हम सबको प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि हम भारत से गरीबी हटायेंगे बेकारी हटायेंगे कि हम भारत को महान बनायेंगे और यह करने के लिए जो भी बलिदान की जरूरत होगी जो भी कुरबानी की जरूरत होगी, जो भी त्याग की जरूरत होगी वो हम करने को तैयार होंगे । आज 15 अगस्त को लाल किले से यह प्रतिज्ञा मैं करता हूं आपके साथ काम करके हम भारत को उसी ऊंचे स्तर पर पहुंचायेंगे । ..धन्यवाद । मेरे साथ जोर से बोलिये..जय हिन्द..जयहिन्द..जय हिन्द..धन्यवाद । राष्ट्रीय गान ।